IAS

सरस्वती

PCS

POL. SCIENCE

Answer Sheet

Mains Exam, Year- 2016

Name. Nitu

Subject. Political Science

Date. 22 oct 2016

UPSC Roll No. 0177220

Contact No.

Hindi / English Medium

सरस्वती IAS

A-20, 102, First Floor, Indraprasth Tower (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi- 09

Ph. 011-27651250, 09899156495, 09810702119

E-mail : saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

1 (a)

उत्तर राजनीति विज्ञान के अनुभववादी उपागम स्वतम् व्यवहारवाद ने राजनीतिक विज्ञान से मूल्यों को हटाकर मूलतः तथ्यों व शुद्ध विज्ञान पर बल दिया। लॉसवेल ने अपनी पुस्तक में उन्ही वस्तुओं व संस्थाओं के अध्ययन को महत्व दिया, जो अनुभव की जा सके। इसी आधार पर चार्ल्स मेरियम, डेविड ईस्टन कॉम्टे आदि ने राजनीति को भौतिकी की भांति विज्ञान बनाने का प्रयत्न किया।

राजनीति के उपरोक्त उपागम की समस्याएँ तब सामने आई जब फासीवाद, नाजीवाद, सर्वाधिकारवाद, मानवाधिकारों का दमन आदि देखा गया। तब यह विचार मान लिया गया कि मूल्यों के बगैर राजनीतिक विज्ञान सामाजिक न्याय व सामाजिक समस्याओं से हट जाएगा। केवल यथास्थितिवादी बनकर रह जाएगा।

तदोपरांत डेविड ईस्टन ने उत्तर-व्यवहारवाद का नारा दिया। साथ ही लियोस्ट्रॉस ने दार्शनिक उपागम को पुनर्जीवित करके तथ्य व मूल्य के बीच समन्वय स्थापित किया। ताकि राजनीतिक विज्ञान चुनाव विश्लेषण के साथ वंचित वर्ग की आवाज भी बन सके।

यहाँ प्रो सिबली का कथन, "राजनीतिक विज्ञान का अध्ययन बिंदु क्या है, क्या था, क्या होगा व कैसा होना चाहिए है।" अत्यधिक प्रासांगिक है।

6½/10

Good

सरस्वती

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(b)

उत्तर — मिल, ग्रीन व लॉस्की जैसे विचारकों ने कल्याणकारी राज्य की नींव रखी। ग्रीन के अनुसार, "राज्य की प्रकृति सर्विस स्टेट की है, जिसका दायित्व लोगों की बाधाएँ दूर करना है।" कल्याणकारी राज्य में राज्य के द्वारा सकारात्मक स्वतन्त्रता, अवसर की समानता व वंचित वर्गों के कल्याण पर बल दिया जाता है।

वहीं गाँधी ने हिंद स्वराज में सर्वोदय की संकल्पना दी। जिसमें पंक्ति के अंतिम व्यक्ति के उत्थान की बात शामिल की गई।

उदारवादियों का कल्याणकारी राज्य व सर्वोदय में कुछ समानताएँ हैं जैसे—

1) दोनों में वंचित वर्ग के उत्थान हेतु कार्य किया गया।

2) स्वतन्त्रता के साथ समानता पर बल।

3) ~~पुलिस स्टेट की अवधारणा को नकारा।~~

अंतर

1) गाँधी के सर्वोदय समाज में शक्ति का विकेन्द्रीकरण, व्यक्तिगत नैतिकता, सत्याग्रह व अहिंसा जैसे मूल्य शामिल है। जो कल्याणकारी राज्य में नहीं।

2) राज्य के संदर्भ में गाँधी के सर्वोदय समाज स्वराज आधारित है। जिसमें राज्य की न्यूनतम हस्तक्षेप होना चाहिए। जबकि कल्याणकारी राज्य में राज्य की भूमिका दाई के समान है।

सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

उपरोक्त भिन्नताओं के बावजूद दोनों में वंचित वर्ग का कल्याण साझा बिंदु है। जो सामाजिक न्याय का द्योतक है।

Good

7/10

(c) राज्य के प्रतिरोध करने का अधिकार सर्वप्रथम लॉक के विचारों में दिखा है। लॉक ने अपनी पुस्तक Two treaties of state में लिखा कि राज्य का निर्माण लोगों के आपसी समझौते से हुआ। ताकि लोगों के प्राकृतिक अधिकार सुनिश्चित हो सके व असुविधा समाप्त हो।

यदि राज्य लोक हित में कार्यरत नहीं है, तो लोगों को क्रांति का अधिकार होगा। ताकि वे पुनः सीमित व संवैधानिक शासन का गठन कर सके।

प्रतिरोध का उपरोक्त अधिकार हन्ना आरेंट की पुस्तक 'The human Conditions' में देखा जा सकता है। जिसमें उन्होंने hard सही विधि को मानने की सलाह दी।

साथ ही गाँधीवादी दर्शन के सत्याग्रह के विचार भी गलत विधि व राज्य के विरुद्ध अहिंसक आंदोलन का समर्थक है। प्रतिरोध का यह अधिकार व्यक्तिवादी चिंतन का द्योतक है। जो लोगों के लिए सरकार को सुनिश्चित करता है, न कि सरकार के लिए लोग।

V. Good

6½/10

आधुनिक प्रगतिशील लोकतांत्रिक व्यवस्था में राज्य के प्रतिरोध का सिद्धांत महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

सरस्वती

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

होता है जो तानाशाही सर्वाधिकारवाद का विरोधी है।

(d) उत्तर उपनिवेशवादी राज्य वे राज्य एशियाई, अफ्रीकी व लैटिन अमेरिकी राज्य है जो दशकों उपनिवेशवाद के शिकार रह चुके थे।

उत्तर उपनिवेशवादी राज्य का विश्लेषण मार्क्सवादी व गैर मार्क्सवादी चिंतन के द्वारा किया जाता है।

उत्तर उपनिवेशवादी

- मार्क्सवाद
  1. मार्क्स
  2. हम्जा अल्वी
  3. डियोडिका
- गैर - मार्क्सवाद
  1. गुन्नार मिर्डल
  2. रशीदुद्दीन खान
  3. रजनी कोठारी

मार्क्सवादी

(1) हम्जा अल्वी के अनुसार उत्तर-उपनिवेशवादी राज्य 'अतिविकसित' राज्य है। जिनमें संसद, सेना, नौकरशाही, शिक्षा आदि के द्वारा मेट्रोपॉलिटन बुर्जुआ अपना प्रभाव आज भी बनाए हुए है। राजनीतिक व्यवस्था अतिविकसित व सामाजिक व्यवस्था अतिपिछड़ी हुई है। जिसके कारण तख्तापलट व तानाशाही देखी जा सकती है

सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

उदाहरण - पाकिस्तान । हम्जा अल्वी के अनुसार 'घरेलू बुर्जुआ' संगठित होकर शोषण व तानाशाही को अंजाम दे रहा है।

(2) समीर अमीन, वालरस्टीन की परिधि - केन्द्र की अवधारणा के अनुसार विकसित देश उत्तर उपनिवेशवादी राज्यों का शोषण कररहे है।

और मार्क्सवादी

(1) मगुन्नार मिर्डल की पुस्तक 'Asiatic drama' में 'सॉफ्ट राज्य' की अवधारणा सामने आई जिनके अनुसार उ० उपनिवेशवादी राज्य कानून व्यवस्था बनाने में भी सक्षम नहीं है।

(2) रशीउद्दीन खान के ने 'टोटल स्टेट' (संपूर्ण राज्य) की अवधारणा प्रस्तुत की। जिसमें भारतीय राजनीतिक दल 'कांग्रेस' को सभी के हितो को शामिल करने वाला बताया। जहाँ लगातार लोकतंत्र मजबूत हो रहा है।

(3) रजनी कोठारी ने भी उ० उपनिवेशवादी राज्यों का सकारात्मक चित्रण किया। जो आज FDI हेतु प्रतिस्पर्धा भी कर रहे है।

संक्षिप्त: उ० उपनिवेशवादी राज्यों में विभिन्न राज्यों का रिकार्ड बेहतर नहीं है। किंतु भारत लगातार प्रगतिशील विकेन्द्रीकृत राज्य की ओर बढ़ रहा है।

7½/10

सरस्वती

सरस्वती

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(e) जे० एस० मिल ने बेंथम की उपयोगितावादी अवधारणा को गुणवत्ता के आधार पर परिवर्तित करके नैतिक प्रजातंत्रवादी की भूमिका निभाई। जिसमें लोकतंत्र को शासन की पद्धति के साथ 'शिक्षा' का आधार भी माना। जैसे —

(1) उपयोगितावाद को नैतिक आधार प्रदान करके सुखों के उच्चतर व गुणवत्ता को महत्व दिया। जबकि बेंथम के सुखों का आधार संख्यात्मक था।

(2) मिल ने लोगों के अधिकारों के संरक्षण के लिए सीमित व संवैधानिक राज्य का समर्थन किया।

(3) महिलाओं के मताधिकार का समर्थन किया

(4) लोकतन्त्र के वृहद रूप (शिक्षा, शासन व मूल्यों के रूप) को स्वीकारा।

उपरोक्त आधार पर मिल को नैतिक डेमोक्रेट कहते हैं। यद्यपि मिल ने एक ~~सम्स~~ व्यक्ति – एक मत का समर्थन नहीं किया। ~~इसलिए उसे अनिच्छुक लोकतांत्रिक~~ साथ ही मिल ने उपनिवेशों में विनम्र अधिनायकत्व का समर्थन भी किया।

उपरोक्त कमियों के बावजूद मिल के सकारात्मक स्वतन्त्रता, उपयोगितावादी विचार व जेंडर न्याय के प्रति संवेदना

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

ने उन्हें नैतिक प्रजातन्त्रवादी बनाया।

(4)

(a) गाँधी जी के चिंतन में आध्यात्म धर्म, नैतिकता, सत्याग्रह - अहिंसा, सर्वोदय आदि विचारों का उल्लेख है। जिनकी परिभाषाएँ स्पष्ट परिभाषाएँ नहीं की जा सकती। किंतु जब व्यवहारिक राजनीतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, तो उनकी अमूर्त संकल्पनाएं मूर्त ही उठती है जैसे →

1) गाँधीजी की "सत्य ईश्वर है व ईश्वर सत्य है" की अवधारणा अमूर्त प्रतीत होती है। जिसमें उन्होंने सत्य की तुलना वैदिक 'ऋत' से की। किंतु जब गाँधीजी के सत्याग्रह आंदोलन को देखा जाए, जिसमें इन्होंने 'सत्य' को प्रकृति के नियम की भांति स्थापित करने के साथ सभी के सत्य की आंशिक सही होने की अवधारणा दी। इनके अनुसार, "हो सभी का अपना अपना सत्य हो सकता है।" इसलिए सभी के प्रति अहिंसा का भाव होना चाहिए।

2) सर्वोदय की संकल्पना में गाँधी ने स्वराज (स्व + राज) को महत्वपूर्ण माना। व्यवहार के नियमों को में उन्होंने सत्याग्रह व अहिंसा अपनाकर सर्वप्रथम ब्रिटिश शासन के विरुद्ध

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

आंदोलन किया और साथ ही स्वयम् के आचरण को नियंत्रित करने की सलाह दी। उनके अनुसार "यदि हम अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें, तो सभी स्वतः के अधिकार सुनिश्चित हो जाएंगे।" ऐसा उन्होंने ~~ग्राम-स्वराज~~ शामिल में स्थापित की साबरमती आश्रम के ~~ग्राम-स्वराज~~ में स्थापित किया।

(3) गाँधी की रामराज्य की कल्पना, उनकी व्यावहारिक राजनीतिक प्रक्रिया में निम्न रूपों में देखी जा सकती है –
1) खादी उद्योगों को बढ़ावा देना।
2) कृषि व भूमि सुधार।
3) नैतिकता उत्थान व आध्यात्मिक जीवन।

(4) गाँधी के असहयोग, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो व ग्रामीण क्षेत्र में किए गए सामाजिक आर्थिक कार्य ~~उनकी~~ उनके ~~आँख~~ चिंतन का विश्लेषण करते हुए प्रतीत होते है जैसे –
1) स्वयम् की कथनी करनी में अंतर न होना।
2) अहिंसा का विचार पर्यावरण के प्रति भी।
3) अधिकारों के साथ कर्तव्य।
4) वंचित वर्गों का सुधार (हृदय परिवर्तन के द्वारा)

(5) राज्य को आत्मा रहित यंत्र मानने के बावजूद व्यवहार में न्यूनतम राज्य का समर्थन किया।

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि गाँधी की राजनीतिक प्रक्रियाओं के उनके अमूर्त चिंतन को विश्लेषित व स्पष्ट कर दिया। अन्यथा केवल शब्दों के आधार पर उन्हें 'दार्शनिक अराजकतावादी' की संज्ञा दी गई।

Good

1½/20

(b)

लास्की ने अपनी पुस्तक 'Grammar of Politics' में लिखा, "अधिकारों के अभाव में कोई भी सामान्य व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता।"

अधिकार नैतिक दावे होते हैं, जो मानव को सही मायने में मानव बनाकर लोकतंत्र को सफल बनाते हैं।

समकालीन विश्व में अधिकारों की अवधारणा अत्यंत व्यापक व विस्तृत है जिसमें नारी अधिकार, पर्यावरण अधिकार व ट्रांसजेंडर अधिकार आदि भी शामिल हो चुके हैं।

समकालीन विश्व में अधिकारों के सभी आयाम राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व नैतिक शामिल हैं। जो पूर्व में केवल ~~आर्थिक~~ राजनीतिक अधिकारों तक शामिल थे। जैसे—

सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

अधिकार

- राजनीतिक अधिकार व नकारात्मक स्वतन्त्रता (शास्त्रीय व नव उदारवादी)
- सामाजिक-आर्थिक अधिकार (कल्याणकारी राज्य व मार्क्सवादी चिंतन)
- नारीवादी नारी आंदोलन (कैरोल पैटमैन साइमन दबुआ)
- बहुसंस्कृतिवादी अल्पसंख्यकों के अधिकार (किमलिका, भीखू पारिख)

समकालीन विश्व में अल्पसंख्यकों के अधिकारों का पुरजोर समर्थन किया जा रहा है। ताकि प्रगतिशील लोकतंत्र को बनाया दिया जा सके। साथ ही साथ अधिकारों की सार्वभौमिकता के बजाए सापेक्षता को महत्व मिल रहा है।

अधिकारों की सार्वभौमिक संकल्पना (मानवाधिकार) पर अफ्रीकी-एशियाई देशों ने फिर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए यूरोपीय-अमेरिकी मूल्यों को शामिल करने की माँग हो रही है। साथ ही समुदायवादी विचारक अधिकारों को समुदाय सापेक्ष बनाना चाहते हैं जिसमें माइकल सैंडल व वाल्जार अग्रणी हैं।

संक्षिप्तत: समकालीन विश्व में अधिकारों के प्रति बढ़ती चेतना ने इन्हे

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
Please do not write anything in this space.

व्यापक व विस्तृत किया है। जिसमें सभी आयामों को शामिल करते हुए समुदाय विशेष के अधिकारों की माँग उठ रही है। विचारों के सामाजिक स्कूल के फ्रैंकफर्ट आंदोलन को और प्रेरित किया है। जिसमें कई अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण के NGOs भी बने।

8½/15

(e)

मैक्स वेबर के अनुसार, "शक्ति को जनमत की सहमति प्राप्त होने पर वैधता बन जाती है।" जो किसी भी शासन के दीर्घकालीन व स्थायी होने की पूर्व शर्त है।

मैक्स वेबर ने वैधता को मूलतः तीन भागों में बाँटा –

① परंपरागत वैधता → जिसमें शासन के दैवीय सिद्धांत के आधार पर राजतंत्र आम जन के बीच अपनी वैधता स्थापित करते है। जो धर्म के नाम पर आज्ञापालन को बढ़ाते है जैसे धर्मशास्त्र में राज्य उल्लिखित

सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(2) चमत्कारिक व्यक्तित्व आधारित वैधता। जिसमें वैधता व्यक्तित्व के नेतृत्व क्षमता पर निर्भर करती है। जैसे स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान गाँधी जी के व्यक्तित्व ने कांग्रेस की वैधता को बढ़ाया।

(3) वैधानिक – आधुनिक युग में वैधानिक वैधता महत्वपूर्ण है। जिसमें सामाजिक समझौते आधारित सरकार के द्वारा लोकहित के कार्य करके लोगों का समर्थन प्राप्त किया जाता है। जिसमें लोग चुनाव, जनमत संग्रह, आज्ञापालन द्वारा, कर भुगतान करके अपनी सहमति प्रकट करती है।

वैधता के उपरोक्त सिद्धांत दर्शाते है कि सहमति प्राप्त शक्ति ही वैधता है, तथा सहमति प्राप्त करने के आधार भिन्न हो सकते है। जिसे ग्राम्शी जैसा नव मार्क्सवादी चिंतक प्राधान्य (Hegemony) की संज्ञा देता है तथा इनका और के द्वारा 'सामुदायिक एकता' आधारित वैधता का समर्थन किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि आधुनिक युग में वैधता का अभाव क्रांति, आंदोलन व सत्ता परिवर्तन को बढ़ावा देता है। जिसे

8/15

Good

सरस्वती सरस्वती

A-20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

अरब क्रांति के संदर्भ में देखा जा सकता है।

Section - B

(5)

(a) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में मार्क्सवादी चिंतन का पहला उदाहरण मार्क्स का विश्लेषण है। जिसमें उन्होंने ब्रिटिश राज को उपनिवेशों के लिए सकारात्मक बताया। क्योंकि ये ताकतें उपनिवेशों में औद्योगिकरण व आधुनिकीकरण को बढ़ावा देगी। जो अंतिमतः साम्यवादी क्रांति का कारण बनेगा।

बाद में एम एन रॉय द्वारा भारतीय समाज का मार्क्सवादी / वर्ग आधारित विश्लेषण किया गया तथा मजदूरों को एक जुट होकर करने के लिए 'कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया' का गठन किया। जो ब्रिटिश शासन के साथ साथ घरेलू बुर्जुआ (उनके अनुसार कांग्रेस) को भी समाप्त करेगा।

~~लोकसंत~~ उल्लेखनीय है कि तात्कालीन क्रांतिकारी आंदोलन भी मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित होकर मजदूरों व किसानों को एकीकृत करने के लिए प्रेरित हुआ तथा मार्क्सवाद के ऊपर रूप समाजवाद का प्रभाव नेहरू, सुभाष व कांग्रेस पर भी पड़ा।

यद्यपि यह दुर्भाग्य रहा कि

सरस्वती

सरस्वती सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

भारत में मार्क्सवादी दलों व संगठनों ने ~~मुख्य~~ स्वतन्त्रता आंदोलन की निर्वाहकर्ता कांग्रेस का विरोध किया व असहयोग, सविनय अवज्ञा व भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल न होने का निर्णय लिया।

हालांकि 'रॉयल इंडियन नेवी' की घटना 1946 में मार्क्सवादी आंदोलन की सकारात्मक भूमिका देखी गई। अन्यथा वे एक विखंडित दल व विरोधी धारा के रूप में बने रहे।

(b)

स्वतन्त्रता उपरांत भूमि सुधारों यथा चकबंदी, हदबंदी, काश्तकारों को स्वामी बनाना, बिचौलियों का अंत आदि को पूरे देश में लागू किया गया। जो सीमित रूप में सफल भी हुआ। आगे चलकर भूमि सुधारों ने भूमि की उत्पादकता बढ़ाने व हरित क्रांति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रभाव

1) भूमि सुधारों ने छोटे काश्तकारों को मालिकाना हक देकर जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किया। जिन्होंने व्यापक विरोध भी किया।

सरस्वती सरस्वती
A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती | कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(2) भूमि उत्पादकता बढ़ाने के साथ किसानों को आर्थिक रूप से सफल बनाया। जिससे उन्हें राजनीतिक रूप से भी जागरूकता किया।

(3) हरित क्रांति की राह बनाकर 'भारतीय राजनीति में पिछड़ी जातियों व क्षेत्रीय दलों के महत्व को बढ़ावा दिया।

(4) यद्यपि जिन क्षेत्रों में ये यह असफल रहे, वहाँ नक्सलवाद की समस्या भी उत्पन्न हुई।

संक्षिप्ततः भूमि सुधार समावेशी विकास के साथ राजनीति के विकेन्द्रीकरण का आधार बने। हालांकि सीमित सफलता ने विषमता व नक्सलवाद को जन्म दिया।

(c)

ग्रेनविल आस्टिन के अनुसार," भारतीय संघवाद सहकारी संघवाद है, जहाँ संघ व राज्यों के बीच सहयोग विद्यमान है।"

उपरोक्त सहकारी संघवाद को मजबूत बनाने का आधार 14 वित्त आयोग की अनुशंसाओं में भी देखा जा सकता है —

सरस्वती

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(1) भारत में राजकोषीय संघवाद को सदैव से सबसे कमजोर माना जाता है। आलोचक राजकोषीय संघवाद के विश्लेषण राज्यों को स्थानीय निकाय के रूप में करते है। (glorified municipality)

(2) उपरोक्त परिस्थिति में 14 वें वित्त आयोग ने संघ राज्यों के वित्त (कर से बँटवारा) को 32 % से बढ़ाकर 42 % कर दिया है) जो उन्हें वित्तीय रूप से सशक्त बनाएगा।

(3) साथ ही ग्रामीण स्वशासन की इकाइयों व शहरी स्वशासन इकाईयों को अधिक धन आवंटित किया है। जिसमें Performance (योग्यता) को ~~मुख्य~~ भी आधार बनाया गया।

(4) इसके अतिरिक्त केन्द्र प्रायोजित योजनाओं (CSS) को पुनर्योजित करके राज्यों को ~~स्वायत्तता~~ योजना बनाने व क्रियान्वयन करने की प्रदान की है।

(5) आबंटित वित्त के प्रयोग की स्वायत्ता प्रदान की गई है (Flexy Scheme)

उपरोक्त आधारपर कहा जा सकता है कि 14 वें वित्त आयोग ने सहकारी संघवाद को मजबूत बनाकर राज्यों को

सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
Please do not write anything in this space.

सशक्त किया है।

(d)

1991 में राव - मनमोहन मॉडल के अंतर्गत नियोजन को विकेन्द्रीकृत व निर्देशात्मक बनाया गया, जिसमें राज्य की भूमिका को सीमित करने के साथ LPG (उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण) को अपनाया।

जिसने राज्य की कल्याण करने की क्षमता को तुलनात्मक रूप से कमजोर किया। क्योंकि—

1) राज्य का अर्थव्यवस्था में सीमित हस्तक्षेप।

2) राज्य में पूँजीवादी व नव उदारवादी मॉडल को अपनाना।

3) ~~विनिवेश~~ खुली प्रतिस्पर्धा व ease of Doing Business आदि ने राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों को कम महत्वपूर्ण बनाया।

यद्यपि भारतीय ~~संविधान~~ राजनीतिक व्यवस्था में समाजवाद बुनियादी ढाँचे का भाग है साथ ही भारतीय राज्य की प्रकृति कल्याणकारी है। ~~इन~~ में भारत ने मध्यममार्ग को

सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

अपनाते हुए खुली अर्थव्यवस्था के साथ नीति निर्देशक सिद्धांतों को पूरा करने का प्रयास किया जैसे 73वें व 74वें संविधान संशोधन से स्थानीय स्वशासन (अनु॰ 40) का गठन व शिक्षा को अधिकार का रूप देना, प्रगतिशील कराधान के द्वारा धन के विकेन्द्रीकरण को रोकना व कार्पोरेट सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत शिक्षा, स्वास्थ्य व कौशल पर खर्च किया जा रहा है।

सांराशतः ग्रेनविल ऑस्टिन की अवधारणा कि "भारतीय संविधान मूलतः सामाजिक न्याय का दस्तावेज है" सत्य प्रतीत होती है।

6/10

(e)

भारत में आपातकाल के दौरान कई मानवाधिकार संगठनों व आंदोलन का जन्म हुआ। (PUCL व PUDR), इसके अतिरिक्त महिला अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, बालश्रम का विरोध आदि आंदोलन 1970 के दशक का पर्याय बन चुके है।

जिनकी प्रतिक्रियास्वरूप राज्य ने

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

निम्न कदम उठाए — (सकारात्मक)

(1) मानवाधिकार आयोग, महिला आयोग, अल्पसंख्यक आयोग, SC व ST आयोग आदि को वैधानिक शक्ति प्रदान करके गठित किया ताकि किसी के भी अधिकारों का हनन नहीं।

(2) विधान व नीति बनाकर महिलाओं के अधिकार सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया जैसे घरेलू हिंसा कानून 2005 व महिला नीति

(3) मानवाधिकार संगठनों (NGOs) को कानून के तहत रजिस्टर्ड किया गया।

यद्यपि मानवाधिकार आंदोलनों को सामान्यतः नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाता है। जिससे राज्य को विरोधी मानने की प्रवृत्ति भी देखी जाती है। जैसे AFSPA का विरोध करने वाले संगठनों व आंदोलनों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही इत्यादि।

उल्लेखनीय है कि भारतीय राज्य की कल्याणकारी प्रवृत्ति ने उसे मानवाधिकार आंदोलन के प्रति संवेदनशील बनाया तथा वंचित वर्गों के उत्थान के साथ सभी के सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक अधिकारों को सुनिश्चित करने की ओर अग्रसर किया। जैसे RTI कानून व हाल के राजद्रोह ~~कानून~~ धारा (124a) के पुनर्विचार को ~~समर्थन~~ व स्वीकारने के संदर्भ में देखा

5½/10

सरस्वती

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

जा सकता है।

(7)

(a) गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' में जिस रामराज्य की ~~संकल्पना~~ सपना देखा में जिस रामराज्य का सपना देखा उसे आज ग्रामीण स्वशासन में देखा जाता है उसे 73वें संविधान संशोधन के द्वारा संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई। साथ ही महिलाओं के लिए सभी स्तरों पर 33% आरक्षण की व्यवस्था भी की गई।

महिलाओं की भागीदारी ने निम्न आधार पर परिवर्तन लाया —

(1) ग्रामीण स्तर महिलाओं की भागीदारी ने उन्हें राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने के साथ ग्रामीण नियोजन में महिलाओं की आवश्यकताओं को शामिल किया जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वरोजगार इत्यादि

(2) पंचायती राज मंत्रालय के अध्ययन के अनुसार वर्तमान में 85000 महिलाएं सरपंच है। जिन्होंने ग्रामीण स्तर पर जेंडर न्याय व जागरूकता को बढ़ावा दिया

(3)

सरस्वती

सरस्वती सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

यद्यपि पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका का सुधार पाई ~~जैसी~~ विचारक ने ~~नकारात्मक~~ शंका की दृष्टि से देखा। उनके अनुसार, 'महिलाओं की भूमिका अत्यंत सीमित है क्योंकि ~~उनका~~ महिलाओं कार्य उनके संबंधियों द्वारा किया जाता है।" हाल में भारतीय प्रधानमंत्री ने भी सरपंच पति की समस्या को उजागर किया। जिससे आरक्षण के लक्ष्य को धूमिल किया।

उल्लेखनीय है कि केरल के पंचायती मॉडल में महिलाओं की सशक्त भूमिका सामने आई है। जो दर्शाता है कि जैसे जैसे महिलाएं सशक्त होंगी वैसे-वैसे पंचायतीराज में उनकी भूमिका सशक्त होगी। जिसे कई गाँवों में देखा भी गया जैसे —

(1) हरियाणा में महिला सरपंचों द्वारा भ्रूण हत्या ~~के~~ का विरोध किया गया। साथ ही घूंघट प्रथा का विरोध किया गया।

(2) राजस्थान में महिला सरपंचों ने ग्रामीण शिक्षा को सुधारने के लिए नकल बंद करने के लिए स्वयं परीक्षा हॉल की पहरेदारी की इत्यादि।

12/20

सरस्वती सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(8) लॉस्की के अनुसार, "यदि समाज संघीय है, तो सत्ता भी संघात्मक होनी चाहिए।" भारत के संदर्भ में यह पंक्ति सटीक बैठती है। जहाँ क्षेत्रीय संगठनों का विस्तार देश की सामाजिक, नृजातीय, क्षेत्रीय, भाषागत, नृजातीय विविधता को प्रदर्शित करता है।

आलोचकों का मानना है कि क्षेत्रीय दलों ने क्षेत्रीय मुद्दों के सामने राष्ट्रीय हितों को बौना कर दिया। जिसके कारण राष्ट्र का एकीकरण कठिन हो गया। क्योंकि क्षेत्रीय दलों ने नृजातीय, जातिगत, धर्म, भाषा को मुद्दा बनाए रखा।

यद्यपि उपरोक्त आलोचना संकुचित प्रतीत होती है क्योंकि भारत एक बहुलवादी देश है जहाँ विविधताओं में एकता के विचार को अपनाया गया है जिसमें विविधताओं को समाप्त करने के बजाए विविधता को शक्ति के रूप में अपनाया गया है।

उल्लेखनीय है कि क्षेत्रीय दलों के द्वारा

सरस्वती

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

इस विविधता का प्रतिनिधित्व किया जाता है जो राष्ट्र को एकीकृत करके राष्ट्र-निर्माण में सहायक है।

जैसे सरकारिया आयोग व पंछी आयोग ने भी स्वीकारा। यद्यपि क्षेत्रीय दलों की चरम मांगें (अलगाव) राष्ट्र के लिए संकट पैदा करती है। अन्यथा सामान्य संदर्भ में क्षेत्रीय दलों ने संवाद को मजबूत करके राष्ट्र एकीकरण को बढ़ाया है।

(c) सामाजिक आंदोलन के तहत समाज के वंचित वर्गों का विकास की धारा से छूटे लोगों अथवा अधिकारों की मांग करने वाले — सिविल समाज द्वारा असंगठित रूप में सरकार के समक्ष अपनी मांगें रखना सामाजिक आंदोलन है। जैसे पर्यावरण, महिला आंदोलन

1970 के दशक से नव सामाजिक आंदोलन का दौर आरंभ हुआ। जो पुराने से निम्न प्रकार से भिन्न है —

(i) पुराने सामाजिक आंदोलन को राजनीतिक दलों द्वारा संचालित किए गए। जबकि नव आंदोलन को नेतृत्व

सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

कर्ता स्वयं सिविल समाज है।

(2) ये आंदोलन वैचारिक आधार पर आरंभ हुए जैसे मार्क्सवादी संगठनों द्वारा श्रमिकों के अधिकारों की माँग। जबकि नव आंदोलन उत्तर आधुनिकतावादी से प्रेरित है।

(3) नव आंदोलन महिला अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार हेतु आरंभ किए जा रहे हैं। जबकि पूर्ववर्ती श्रमिक व वंचित वर्ग के आंदोलन थे।

(4) नव आंदोलन की प्रकृति सार्वभौमिक है जैसे नारी अधिकारवाद, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि जबकि पूर्ववर्ती क्षेत्र आधारित थे।

(5) नव आंदोलनों में वैश्वीकरण के विरोध भी शामिल है जो विकास के वैकल्पिक मॉडल को प्रस्तुत करते हैं जैसे 'world Social Forum', ग्रीन पीस इत्यादि।

Good

सांकेतत: नव आंदोलन फ्रैंकफर्ट स्कूल के क्रिटिकल सिद्धांत से प्रभावित प्रतीत होते हैं जो एक आयामी व्यक्ति (one dimensional man) की अवधारणा को तोड़ते हुए समावेशी व धारणीय विकास के समर्थक हैं।

9/15

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(8)

(क) भारत में शक्ति के पृथक्करण के सिद्धांत को अपनाया गया है। जिसमें विधायिका का दायित्व कानून का निर्माण व न्यायपालिका का दायित्व संविधान का उल्लेख करने के साथ संरक्षण करना भी है।

स्वतन्त्रता उपरांत विधायिका व न्यायपालिका के बीच कई संघर्ष के बिंदु देखे गए जैसे—

1. विधायिका द्वारा विधि द्वारा मूलाधिकार के अध्याय में परिवर्तन करना तथा संपत्ति के अधिकार को समाप्त करना। साथ ही 24वें 25वें संविधान संशोधन द्वारा न्यायपालिका के संविधान संशोधन की शक्ति सीमित की गई।

2. जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप न्यायपालिका ने समय समय पर निर्णय दिए जैसे शंकरी प्रसाद वाद, गोलकनाथ वाद, केशवानंद भारती वाद, मिनर्वा मिल्स वाद। अंतिमतः न्यायपालिका ने केशवानंद भारती वाद में आधारभूत ढाँचे का निर्माण करके विधायिका के मनमाने संविधान संशोधन पर रोक लगाई।

सरस्वती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(3) हाल में 'न्यायिक नियुक्ति आयोग' के गठन के संबंध में पुनः दोनों में शक्ति संघर्ष दिखा। जिसमें विधायिका कोलेजियम व्यवस्था को समाप्त करके न्यायधीशों की चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी बनाना चाहती है। (99वाँ संविधान संशोधन)

प्रतिक्रिया स्वरूप न्यायपालिका ने 99वें संविधान संशोधन को रद्द कर दिया ~~व~~ न्यायपालिका की ~~[illegible]~~ [illegible] स्वतन्त्रता को बचा लिया।

(4) साथ ही विधायिका व कार्यपालिका द्वारा न्यायपालिका पर अतिसक्रियता का आरोप भी लगाया जाता है।

निष्कर्षतः भारत में विधायिका-न्यायपालिका के संबंधों में शक्ति संतुलन का कारण कहीं न कहीं विधायिका की अनदेखी व कमतर इच्छा शक्ति रहा है। भीखू पारिख के अनुसार, "भारत में न्यायिक लोकतंत्र की स्थापना हो रही है जो पहले कहीं नहीं देखी गई।" यद्यपि

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती | कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

लोकतंत्र में न्यायपालिका की सरकार की कल्पना करना अनुचित है। इसलिए शासन के सभी अंगों को अपनी मर्यादाओं में रहते हुए चेक एण्ड बैलेंस को बनाए रखना चाहिए।

Good

13/20

(6)

भीमराव अंबेडकर के अनुसार, "किसी भी देश के विकास का पैमाना वहाँ की महिलाओं की आजादी आधारित होना चाहिए, क्योंकि वही देश के विकास की सही तस्वीर दिखाता है।" उपरोक्त दर्शन आधारित भारतीय कल्याणकारी राज्य ने निम्न संदर्भ में महिलाओं के अधिकार सुनिश्चित किए —

(1) संविधान - अनु० 14, 15, 19, 21 व नीति निदेशक सिद्धांत - समान कार्य समान वेतन, मातृत्व लाभ।

(2) विधान द्वारा - हिंदू कोड बिल, दहेज प्रथा निवारण 1963, घरेलू हिंसा विरोधी 2005, मातृत्व लाभ 2016, 73 वां संविधान संशोधन इत्यादि

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

(3) सरकारी योजनाओं - बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सेल्फ हेल्प ग्रुप, स्वाभिमान e haat इत्यादि।

(4) महिला आयोग का गठन। साथ ही साथ समय समय पर न्यायपालिका के निर्णयों ने महिला अधिकार सुनिश्चित किए हैं जैसे विशाखा वाद इत्यादि।

मुद्दे

(1) अल्पसंख्यक महिलाओं के अधिकार व समान ~~नागरिकता~~ सिविल कोड का मुद्दा

(2) ग्रामीण महिलाओं के मुद्दे।

(3) कार्य स्थल पर यौन शोषण।

(4) मैरिटल रेप इत्यादि

(5) महिलाओं का आर्थिक वास्तविक सशक्तिकरण

उपरोक्त मुद्दे अभी भी बचे हुए। जिनके लिए लगातार नारीवादी आंदोलन हो रहे हैं। जिसे नई महिला नीति में शामिल करने का प्रयास किया। चूंकि जेंडर न्याय दीर्घकालीन प्रक्रिया है। जिसे पाने के लिए निरंतर प्रयास जारी है

सरस्वती
सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
Please do not write anything in this space.

सरस्वती
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
Please do not write anything in this space.

(C)

दबाव समूहों के द्वारा समाज के किसी विशेष समूह व वर्ग के आर्थिक -सों व हितों को पूरा करने के लिए आंदोलन किए जाते है। जिसे हित अभिव्यक्ति कर की संज्ञा भी दी जाती है।

दबाव समूहों की आंदोलनों में भूमिका जैसे—

(1) श्रम सुधारों के विरोध में श्रमिक दबाव समूह जैसे AITUC, CITU, भारतीय मजदूर संघ द्वारा आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया जाता है यद्यपि राजनीतिक दलों से संबंध होने के कारण से विवादित है।

(2) दिल्ली में 4 year programme के विरोध में ABVP व NSUI जैसे छात्र दबाव समूह का महत्वपूर्ण योगदान रहा। साथ ही साथ छात्रों के अधिकारों व आवश्यकताओं की मांगों को छात्र राजनीति द्वारा उठाया जाता है।

सरस्वती
सरस्वती

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

(ङ) किसानों के हित जैसे ऋण माफी, भूमि सुधार, सब्सिडी आदि की मांग किसान दबाव समूह द्वारा उठाई गयी जैसे महाराष्ट्र में शरद जोशी द्वारा, U.P में महेंद्र टिकैत द्वारा इत्यादि। हालांकि किसान संगठनों का आखिल भारतीय रूप न होना, उनके आंदोलन को कमजोर बनाता है।

(च) सरकार पर लगातार ease of doing business का दबाव, विनिवेश की मांग वाणिज्यिक दबाव समूहों द्वारा की जाती है।

(छ) नारी अधिकार आंदोलनों में विभिन्न राजनीतिक दलों से संबंध दबाव समूह भाग लेते हैं और नेतृत्व प्रदान करते हैं।

(ज) स्वतन्त्रता पूर्व व 1940 के दशक में हैदराबाद ~~सम~~ रियासत के संघ में शामिल करने में धार्मिक दबाव समूहों व दलों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please do not write anything in this space.

इस प्रकार दबाव समूह विभिन्न आंदोलनों में भागीदार बनकर मांगों को व विस्तृत बनाते है। यद्यपि समय-समय पर इनके नकारात्मक परिणाम भी सामने आए जैसे-

(1) हरियाणा में जाट आरक्षण आंदोलन, गुजरात में पटेल आंदोलन, आंध्र में कापू जाति आंदोलन में जाति आधारित दबाव समूहों ने हिंसा का सहारा लिया जो सभी के लिए हानिकारक रहा।

(2) दबाव समूहों का वैचारिक रूप में बटना व राजनीतिक दलों से सम्बद्ध होने के कारण व्यापक ~~आंदोलन~~ हितों के बजाए संकीर्णता भी सामने आती रहती है। जैसे श्रमिकों के अधिकार संबंधित आंदोलन में भारतीय मजदूर संघ का दूर रहना (सत्ता पक्ष संबंधित दबाव समूह से जुड़ा है।)

संक्षिप्ततः दबाव समूहों की भूमिका लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही भारतीय विविधतामूलक राज्य में हित अभिव्यक्तिकरण के प्रमुख साधन है।

9/15 Good

A- 20, 102, Indraprasth Tower, (Behind Batra Cinema), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph:- 011-27651250, 09810702119, 09899156495
E-mail- saraswati.ias@gmail.com, Visit us at: www.saraswatiias.com